वैदकीय धर्मशास्त्र का वैशिष्ट्य

डॉ. मिश्री लाल

हमारी वैदिक सनातन परम्परा की मुख्य बिन्दु ऋत है, अर्थात् इसे सही, सत्य, उचित, ईमानदार, निश्चित नियम आदि अर्थों में प्रयुक्त किया गया है। मोनियर विलियम्स ने अपने संस्कृत इंग्लिश कोश में ऋत का विशिष्ट अर्थ शाश्वत सत्य बताया है। इस सम्बन्ध में ऋग्वेद के दूसरे मण्डल में उल्लिखित ऋत को ही शाश्वत सत्य के रूप में ले सकते हैं। जहाँ आया है कि यह सम्पूर्ण संसार ऋत से उत्पन्न है। वैदिक परम्परा के इसी ऋत से सदाचरण की ओर प्रवृत्ति हुई। धीर–धीरे सदाचरण में प्रवृत्ति के लिये ही बहुत नियम बने जिसमें बताया गया कि सदाचरण से ही स्वर्ग प्राप्ति सम्भव है। सत्य ही चरित्र का श्रेष्ठतम् गुण है, जिसकी स्वीकारोक्ति ताण्डयब्राह्मण देता है।